वैदिक काल विचार

सबसे प्रथम इस बात को जानने की आवश्यकता है कि वैदिक भारत किसे कहते हैं।

वैदिक भारत का अर्थ :-

वैदिक भारत शब्द को देखने से यही प्रतीत होता है कि जिस समय वेदों का प्रादुर्भाव हुआ, उस समय की जो भारतीय अवस्था थी वह वैदिक भारत से अभिप्रेरित थी, ऐतिहासिक दृष्टि से ऋग्वेद की पुस्तक संसार के पुस्तकालय में सबसे प्राचीन ग्रन्थ है मैक्समूलर ने "Chips from The German Workshop" पुस्तक में इसी प्रकार वर्णन किया है। कुछ पाश्चिमीय विद्वानों ने वेदों का समय इस प्रकार बतलाया है कि मैक्समूलर, विलसन, और ग्रिफ्थ महाशय ईसा से १५०० से २००० वर्ष तक पूर्व मानते हैं। जैकोबी महाशय ४००० वर्ष पूर्व तक मानते हैं। लोकमान्य श्री बाल गंगाधरजी तिलक ने शतपथ ब्राह्मण नामक ग्रन्थ में आई हुई [Orian] मृगशीर्ष की स्थिति का विवेचन करते हुए यह सिध्द किया है कि शतपथ ब्राह्मण कम से कम ५००० वर्ष से पूर्व का अवश्य है। क्योंकि मृगशीर्ष की तत्कालीन स्थिति से आधुनिक स्थिति तक आये हुए परिवर्तन के लिये कम से कम ५०००वर्ष अवश्य चाहिये अतः वेद संहितायें जो ब्राह्मण ग्रन्थों से प्राचीन हैं, वे ५००० वर्ष से अर्वाक कालीन कदापि नही मानी जा सकती, महाभारत युध्द का समय ५००० वर्ष से कुछ उपर इतिहासज्ञों ने निश्चित किया है महाभारत का युध्द कलियुग के प्रारम्भ में हुआ था और रामयण का युध्द द्वापर के प्रारम्भ में। द्वापर का काल परिमाण कलियुग के काल परिमाण से दुगना है, कलियुग का प्रारम्भ ईसा ३१०२ वर्ष पूर्व फरवरी की १३ तारीख से हुआ ऐसा शिवराम वामन आप्टे की संस्कृत अंग्रेजी डिक्सनरी में लिखा हुआ है साथ ही कलियुग का परिमाण ४,३२००० वर्ष बताया है। कलियुग का यह प्रथम चरण चल रहा है। जिसका समय ५१०४ वर्ष चल रहा है। इस प्रकार मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम का समय ८,६९१०४ लगभग समय चल रहा है। राम चन्द्रजी के सम समय तत्वज्ञानी राजा जनक जी और महर्षि याज्ञवल्क्य के परस्पर संबन्ध से ज्ञात होता है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने वर्तमान शतपथ ब्राह्मण का प्रणयन किया, इस शतपथ ब्राह्मण के पूर्व भी कोई यजुर्वेद का ब्राह्मण था, यह शुक्ल और कृष्ण यजुर्वेद की गाथा जो ब्राह्मण ग्रन्थों के सन्दर्भ में है। इससे ब्राह्मण ग्रन्थों की प्रणयन गाथा महाशय मैक्समूलर ने शतपथ नामक ग्रन्थ की भूमिका में दी है।

इस प्रकार विचार करने से जब शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ की समय तालिका लगभग ९ लाख वर्ष से उपर ही जाती है। वेदों के प्रकाश का समय तो बहुत ही प्राचीन प्रतीत होता है। उस समय देश की वैदिक व्यवस्था परिपक्व अवस्था में थी अतः ब्राह्मण ग्रन्थ जो कर्मकाण्ड के प्रवर्तक हैं, किसी न किसी रूप में बहुत प्राचीन काल में भी विद्यमान थे अतः वेद जो ब्राह्मण ग्रन्थों का आधार है और सृष्टि की सबसे उन्नत अवस्था का प्रकाश ग्रन्थ है उसके काल के विषय में तो कहा भी नही जा सकता, हमारा सृष्टि संवत (एक अरब सत्तानवे करोड उनतीस लाख उनचास हजार एक सौ चार)(१,९७,२९,४९,१०४ सृष्टी संवत) यही समय वेद के काल पर कुछ निर्देश कर सकता है।

काल निरूपण की आशंका :- जो लोग वेदों को अपौरुषेय मानते हैं वे वेदों को नित्य कहते हैं अतः उनके मत से वेद किसी समय बने नही सदा से एक रूप में चले आ रहे हैं अव्यक्त रूप में तो उनके कथनानुसार वेदों को नित्य मानना ही पडेगा, परन्तु व्यक्त रूप में जो उस अव्यक्त रूप का प्रकाश हुआ उसका तो कोई न कोई समय मानना ही पड़ेगा जब वह प्रकाश हुआ वह समय सृष्टी के विकास की पूर्ण उन्नत अवस्था के सिवाय और नही हो सकता, क्योंकि उस समय विकास को प्राप्त हुआ मनुष्य का ज्ञान नेत्र उस प्रकाश को देख सका होगा, वही पूर्ण विकास की अवस्था सृष्टि की आदि कहानी है। जब वेदों का प्रकाश होता है और उससे पूर्व स्वाभाविक नैमैत्तिक ज्ञान के आधार पर मनुष्य पूर्ण विकास की ओर बढता जाता है वेद के व्यक्त स्वरूप को भी नित्य मानने वाले लोग संहिता भाग की तरह इनको भी नित्य मानते हैं। जिस प्रकार ब्राह्मण ग्रन्थों में विधि और अर्थवाद साथ-साथ है। इसी प्रकार केवल संहिता भाग में भी केवल विधि नही है। किन्तु विधि के साथ अर्थवाद भी बहुत है जैसे -

'' इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद् व्याचचक्षिरे''

इन सभी युक्तियों को ध्यान में रखकर यदि विचार किया जाय तो यह परिणाम निकलता है कि ज्ञान की नित्यता से, ज्ञान को कार्य कारण भाव रूप होने से, वेद ज्ञान का ही नाम होने से, मन्त्र को वृत्यात्मक होने से वेद की तथा ब्राह्मण ग्रन्थों की नित्यता सिध्द होती है। ऐसा होते हुए भी ब्राह्मण ग्रन्थों को संहिता भाग के पश्चात् ठहराना पडता है। **संहिता, संग्रहम इता संग्रहं प्राप्त भवित।** इसी प्रकार से वेद की ११२७ शाखायें हैं। जो अनेक सम्प्रदायगत वेद के प्रस्तार को सूचित करते हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रायः संहिता ग्रन्थों के मन्त्रों की प्रतीकात्मक व्याख्या की गई है। और कर्मो की प्रक्रिया दिखलाने में मन्त्रों के प्रयोगों का संकेत किया गया है। जब कि मन्त्र भाग में कही भी ब्राह्मण ग्रन्थों का संकेत नही है। अतः मन्त्र भाग को पूर्व भाग ब्राह्मण ग्रन्थों के पश्चात् मानना ही चाहिये।

वेद और ब्राह्मण ग्रन्थों में भेद :-

ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना शैली संहिता भाग से नितान्त भिन्न होने से और व्याख्यान ग्रन्थ का स्वरूप होने से ब्रह्मण ग्रन्थ संहिता भाग से बाद ही समझना चाहिये ब्राह्मण शब्द का अर्थ है **''ब्रह्म वेदम् नयतीति ब्राह्मणः''** अर्थात वेद को जो प्राप्त कराता है वह ब्राह्मण है। जिस समय मनुष्य संहिता मात्र से ही अपने पुरूषार्थ को सिद्ध करने में समर्थ थे, तब उन्हें ब्राह्मण जैसे किसी विस्तार बताने वाले ग्रन्थ की आवश्यकता नही, परन्तु जैसे-जैसे लोगो में ऱ्हास होना आरम्भ हुआ वैसे विस्तारक ग्रन्थ का सृजन होने लगा, परमेश्वर की इस सृष्टि में प्रत्येक वस्तु का प्रादुर्भाव समय की अपेक्षा से स्वयं होता रहता है। वेदों का जिस समय प्रादुर्भाव हुआ होगा, उससे पूर्व मनुष्यों की स्थिती शारीरिक, मानसिक और आत्मिक रूप में अति उच्च अवस्था को पॅहुची हुई होगी क्योंकि वेदों के मन्त्रों में द्रव्य देवता आदि के गुण वर्णन, ऋषिवर्णन, छन्द वर्णन तथा स्वर वर्णन और उनकी प्राप्ति के उपाय तथा प्राप्ति के लाभ ऐसी उत्तम रीति से उत्तम शब्दों में बताये गये हैं। मनुष्य उनके उच्चारण तथा क्रिया कर्म की सिध्दि से मन्त्रों को स्पष्ट करते थे, ज्यों-ज्यों मनुष्य की कार्य सिध्दि का प्रभाव कम होने लगा उसी प्रकार उन मन्त्रों से मन्त्र कार्यसिध्दि में समर्थ हो जायें, वह रीति और संस्कारों की शुध्दि के द्वारा यज्ञ संपादन की रीति ब्राह्मण ग्रन्थों ने चलाई, संस्कारों को शुध्द करना ही यज्ञों का प्रयोजन है। जो पुरूष यह युक्ति देते हैं कि कोई भी वस्तु अपने अंगों से अलग सही रहती है। अतः वेदाङ्ग जो वेद के अंग हैं वे वेद के साथ ही वर्तमान है उससे अलग नही है। वेद के साथ यदि उसके अंगो की सत्ता सूक्ष्म रूप से उसमें आर्न्तहित नही हो तो अंगो का विकास हमें पीछे दीख ही नही सकता क्योंकि जो कार्य दीखता है। उसका अवश्य ही सूक्ष्म कारण होता है। वेदो के साथ भी उसके सभी अंग विद्यमान हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों का वेदांग वेद के पश्चात काल में प्रकट हुए यह ज्ञान के विकास को लेकर कहा जाता है। निरूक्तकार यास्क मुनि ने ज्ञान के विकास की दृष्टी से इसी प्रकार वर्णन किया है।

(''साक्षात्कृत धर्माण ऋषयो बभुवुस्ते ऽ वरेभ्यो ऽ साक्षात्कृत धर्मस्य उपदेशेन मन्त्रान्सम्प्रादुरूपदेशाय ग्लायन्तो ऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुः वेदंच वेदांगानिच ''॥)

पहले इस प्रकार के ऋषि लोग होते थे जो धर्म के अप्रत्यक्ष रूपको क्रिया में लाकर प्रत्यक्ष कर दिखाते थे उन्होंने धर्म को प्रत्यक्ष न कर सकने वाले हीन लोगों की मन्त्रों का प्रयोग बताया,

जिससे कि वे धर्म को साक्षात करने में समर्थ हो सकें, इससे स्पष्ट है कि मन्त्रों के प्रयोगों से पूर्व लोगों की अवस्था ऐसी थी, वे अपनी सिध्दि अवस्था से धर्म को प्रत्यक्ष कर सकते थे, जब लोगों को उपदेशों से ग्लानि होने लगी, तब उन पुरूषों को प्रकाश देने के लिये इस निरूक्त शास्त्र को जिसमें शब्दों का कारणात्मक वास्तविक स्वरूप जानने का उपदेश दिया गया है। ज्ञान के विकास की दृष्टि से वेदाङ्गों का वेद के पश्चात सृजन हुआ और संसार चक्र के परिवर्तन के नियम से जब पुरूषों की अवस्था गिरनी प्रारम्भ हुई तो प्रार्थना करने के लिये, अपने अन्दर देव शाक्तियों को जगाने के लिये वेद वेदाङ्गों का प्रादुर्भाव हुआ। जैसे जैसे मनुष्यों की अवस्था गिरती चली गई साधन प्रसाधन का विस्तार बढता ही चला गया, धार्मिक तत्व के आधार में मनुष्यों की रूचि कराने के लिये यज्ञ द्वारा संस्कारों की शुद्धि करके योग्यता सम्पादन करने के लिये उपाङ्गों के दर्शन ग्रन्थों का विस्तार हुआ, इसी प्रकार देश काल भेद से जब मनुष्य विचार करने को भी समर्थ न रहे, तो उन्हें स्मृति रूप ग्रन्थ बनाकर दिये गये, जिसमें ''करो'' ऐसी ही आज्ञा रखी गई जब मनुष्य स्मृती आदि ग्रन्थों से उदास होने लगे तो उन्हें जीवन संबन्धी वैदिक नियमों को पुराण महाभारत आदि द्वारा कथा रूप में रोचक बनाकर प्रेरणा देनी प्रारम्भ की। जब लोगों ने पुराणादि की कथा को कथामात्र ही समझा तथा और कोई तत्व आन्तरिक आशय उससे निकालने और समझने के योग्य न रहे तो उन्हे यह उपदेश हुआ कि पुराणादि ग्रन्थ सब कपोल कल्पित हैं, इनको भी त्यागो। और मनुष्यों ने विवेक शक्ति के आधार पर खोजते-खोजते उसी धर्म ग्रन्थ वेदों पर पहुचे, जहाँ से वे चले थे, जो सच्चाई मिले उसे ग्रहण करो, इसी प्रकार क्रम से ज्ञान के स्रोत तक पहुँच सकोगे। इसलिये मानव मात्र का कर्तव्य है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेदों का पढना, पढाना, और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।

- वेद प्रकाश शास्त्री (एम.ए)
आर्य समाज,नयागंज
हाथरस २०४१०१